# यात्राओं का जिक्र

## (विदेश)

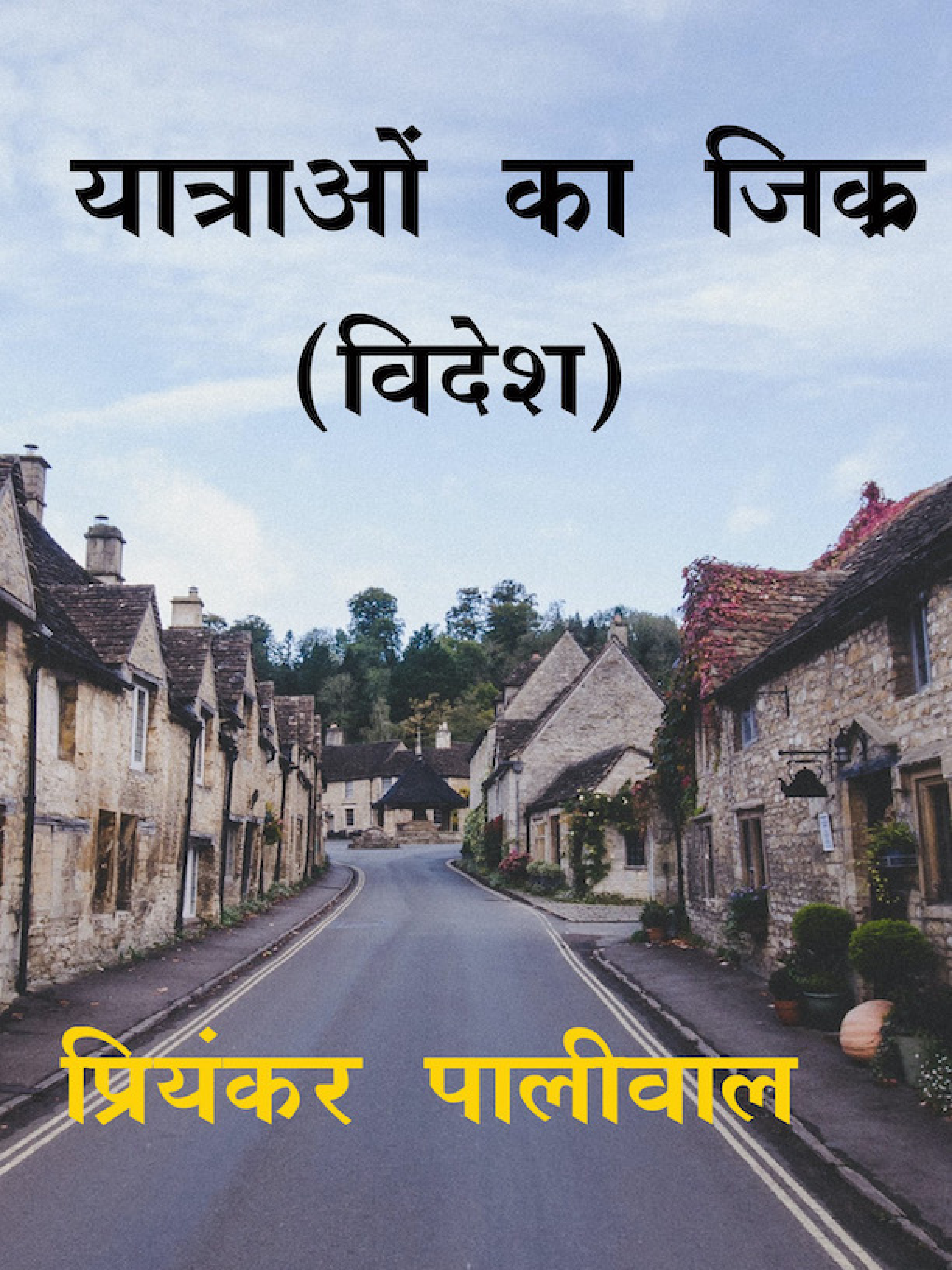

प्रियंकर पालीवाल

# यात्राओं का जिक्र

## (विदेश)

**संपादक**

**प्रियंकर पालीवाल**

**दुनिया में मानुष जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण-तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। कमर बांध लो भावी घुमक्कड़ो, संसार तुम्हारे स्वागत के लिए तैयार है।**

**राहुल सांकृत्यायन,** घुमक्कड़ शास्त्र

# अनुक्रम

**संपादकीय / 6**

| | | |
|---|---|---|
| एशिया के गले का मोती | शंभुनाथ | 11 |
| मलेशिया : जहाँ तारे जमीं पर चलते हैं | चन्द्रकला पाण्डेय | 21 |
| दक्षिण पूर्व एशिया की मुकुट-मणि : वियतनाम | जगदीश शर्मा | 33 |
| मकाऊ : चीन में पश्चिमी संस्कृति का प्रवेश द्वार | राजेश जोशी | 44 |
| सूरज के देश में | रीतारानी पालीवाल | 50 |
| कोरिया में भी है एक गया | दिविक रमेश | 73 |
| जापान डायरी के कुछ पृष्ठ | कृष्णदत्त पालीवाल | 84 |
| तेहरान में पहला जुमा | असग़र वजाहत | 99 |
| सफर-ए-ईरान : एक यादगार अनुभव | माधुरी छेड़ा | 110 |
| हाज़िर हूं ए अल्लाह ! हाज़िर | हसन जमाल | 116 |
| इस्ताम्बुल में हमारा प्रवास | अशोक कुमार पाण्डेय | 131 |
| यह अनजाना देश | रीना पाण्डेय | 142 |
| क्या देखा था, क्या देखा ! | अब्दुल बिस्मिल्लाह | 148 |
| ग्रीस : धूप में चमकते सफेद घर | सुनील दीपक | 157 |
| करेका की यादें | गंगा प्रसाद विमल | 165 |
| एक पौराणिक और ऐतिहासिक यात्रा-प्रसंग | रमेशचंद्र शाह | 171 |
| इटली में कुछ दिन | प्रदीप पंत | 181 |

| | | |
|---|---|---|
| अपना-अपना गोंडा | अजित कुमार | 195 |
| जिस देश का वासी ईश्वर है | सुवास कुमार | 198 |
| मिकूमी अरण्य में एक रात | उर्मिला जैन | 213 |
| कनाडा सफर के अनूठे रंग | सुधा भार्गव | 219 |
| संसार का सबसे छोटा महाद्वीप | प्रज्ञा शुक्ल | 224 |
| विलायत का जादू | महेश दुबे | 233 |
| लिवरपूल से फिलाडेल्फिया | अनामिका | 239 |
| सूडान से दिल्ली तक | किरण अग्रवाल | 251 |
| लौटा हुआ यायावर | योगेश अटल | 257 |

*यात्रा, सफर, अन्वेषण का एक अपना अस्तित्व होता है। हर यात्रा अन्य सब यात्राओं से भिन्न होती है। वह अपना व्यक्तित्व, स्वभाव, वैशिष्ट्य और निरालापन रखती है... उसके बारे में हमारी सारी योजनाएं, चौकसियां, व्यवस्था और ज़ोर-जबरदस्ती बेकार है। वर्षों के संघर्ष के बाद हमें पता चलता है कि हम यात्रा पर नहीं हैं, बल्कि यात्रा खुद हम पर हावी है। ... और यह सब समझ लेने के बाद ही कहीं भीतर ही भीतर कुलबुलाते घुमक्कड़ को शान्ति मिलती है और वह उसकी रौ में बह सकता है। तभी जाकर कहीं कुण्ठाएं खत्म होती हैं। यात्रा तब विवाह की तरह हो जाती है... ।*

*जॉन स्टाइनबेक, ट्रैवल्स विद चार्ली*

**संपादकीय**

## यात्रा का देशकाल

**मा**नव का इतिहास दरअसल आव्रजन और यात्राओं का इतिहास है। मनुष्य के बढ़ने का, रुकने का और जाने-लौटने का। सत्तर-अस्सी हजार वर्ष पूर्व आधुनिक मनुष्य-होमो सेपियन्स-अफ्रीका से पूरे विश्व में फैला और आज भी-धीमी पदयात्राओं से हाइपर मोबिलिटी तक-उसकी यायावरी की वृत्ति में कोई कमी नहीं आई है।

यात्राएँ चाहे काल्पनिक हों या वास्तविक, उनका विवरण मन को मोहता है। यात्रा इतिहास में जाना होता है और वर्तमान में लौटना भी। मानव-यात्रा की शुरुआती दास्तानें अत्यंत कल्पनापूर्ण रही हैं। सभी प्राचीन महाकाव्य अपने ढंग के अनूठे यात्रावृत्त भी हैं। रामायण राम की नहीं, राम के अयन की-राम के मार्ग की-कथा है।

यात्राओं का धर्म के साथ गहरा संबंध रहा है। प्राचीन यात्रा-साहित्य का बहुलांश आध्यात्मिक 'स्पेस' में ही रचा गया। राम का वनवास, पाण्डवों का अज्ञातवास, बुद्ध का गृहत्याग या महाभिनिष्क्रमण, मूसा का माउण्ट सिनाई से 'टैन कमाण्डमेंट्स' के साथ लौटना, संत पॉल की यात्राएँ और इलहाम के पहले मुहम्मद की यात्रा, ऐसी यात्राओं के अनुपम उदाहरण हैं।

भारत में आम आदमी आध्यात्मिक यात्राओं पर जाता रहा है और आध्यात्मिक गुरु मानवीय यात्राओं पर-मानव-मुक्ति की यात्राओं पर-निकलते रहे हैं। गांधी की दांडी यात्रा संभवत: आधुनिक भारत की प्रथम राजनैतिक यात्रा थी, जो जन-चेतना के अभूतपूर्व ज्वार का जरिया बनी और जिसने अंग्रेजी शासन की जड़ें हिला दीं।

यात्रा-संस्मरण अंतरसांस्कृतिक हों या अंतरराष्ट्रीय, या अपने ही देश के विभिन्न इलाकों की यात्रा का वृत्तांत; साहित्य की अत्यंत लोकप्रिय विधा हैं। प्रश्न यह भी है कि हाशिए की विधा होने के बावजूद यात्रा-साहित्य की लोकप्रियता का राज क्या है ? समय के साथ यात्रा-साहित्य के स्वरूप और प्रयोजन में क्या बदलाव आया